Volume-04
Issue-02
February -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

समकालीन लेखिकाओं के साहित्य में नारी चेतना

डॉ0 नीलम देवी

सहायक प्रवक्ता, टीका राम गर्ल्जकॉलेज, सोनीपत

प्रस्तावना

प्रकृति का सबसे सुन्दरतम उपहार है नारी। संसार में यदि नारी न होती, तो सभ्यता और संस्कृति ही नहीं होती। भारतीय मान्यताओं में नारी को देवी रूप माना गया है। मनुस्मृति में कहा गया है– ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः'' अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। पाश्चात्य मान्यताओं में भी नारी को गौरवान्वित किया गया है। गेटे ने कहा है– ''दि एटरनल फेमिनिन ड्रूरज अस अपवार्ड'' (अर्थात शाश्वत् नारीत्व हमें सामान्य स्तर से उठाकर ऊँचाई की ओर ले जाता है) जहाँ एक ओर नारी को देवी रूप में देखा गया है। वहीं दूसरी ओर उसकी निन्दा कर उसे दानवी रूप में देख गया है।

पुरूष की तुलना में नारी अधिक मानवीय है फिर भी मानव संस्कृति के निर्माण में उसे अधिक महत्व नहीं मिला। अपने विविध रूपों में नारी ने पुरूष को संवर्धन, प्रोत्साहन ओर शक्ति दी है। बंगाल और महाराष्ट्र में समाज सुधारकों ने स्त्रियों के प्रति फैली बुराइयों पर आवाज उठाना शुरू किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आधुनिकता–बोध के कारण परम्परागत जीवन–मूल्यों के प्रति लोगों की आस्थायें टूटने लगी थी। बदली हुई सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के कारण आधुनिक जीवन दृष्टि से समग्र परिवर्तन हुआ इस परिवर्तित दृष्टिकोण को महिला लेखिकाओं ने रचना स्तर पर अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया। बदलते हुये सामाजिक जीवन और बदलते जीवन मूल्यों के कारण रचनात्मक अभिव्यक्ति का अनुभव जगत भी बदल गया धर्म सम्मत जाति व्यवस्था ने जातिवाद के रूप में असमानता, शोषण और धृणा का जाल फैलाया था और उसे करमवाद सिंद्धांत के रूप में दलितों और स्त्रिओं के दिमाग पर पूरी तरह फैला दिया था। स्त्री ओर अधिक मुखर होकर धीरे–धीरे अपने कदम आगे बढ़ाती हुई जीवन–राह में अग्रसर होने लगी। इसी क्रम में उसने अपनी लेखनी की धार को भी तेज किया। नारी समस्या तथा नारी जीवन की जटिलताओं को सामाजिक व्यवस्था के कारण सम्मान में उनके निर्धारित स्थान को लेकर उठाये सवालों में जूझते सृजनात्मक साहित्य का परिचय दिया।

आज स्त्रियाँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कार्यरत हैं। आर्थिक रूप से स्वावलम्बी स्त्रियों की भी एक लम्बी फेहरिस्त है, किन्तु विडम्बना यह है कि स्त्री चाहे गाँव की हो या शहर की, नौकरी–पेशा हो या गृहिणी, यह भिन्न–भिन्न प्रकार का जीवन जीने वाली स्त्रियाँ जब अपनी जीवन–स्थिति का विश्लेषण करती हैं तो यह देखने को मिलता है कि तमाम बहसों और नारी–मुक्ति (अस्मिता) के तमाम नारों के बावजूद उनकी जीवन स्थितियों में बहुत मामूली परिवर्तन आया है और कहीं–कहीं पहले से अधिक दुष्कर जीवन स्थितियाँ दिखाई पड़ती हैं। इस विषय पर प्रभा खेतान लिखती हैं – ''समकालीन स्त्री–चिंतन का विषय है – स्त्री, उसका जीवन और जीवन की समस्याएँ। नारीवाद का यही उद्देश्य दलन के अनुभवों की अभिव्यक्ति ही है। खेतान प्रारम्भ से ही स्त्री–विमर्श के केन्द्र में बनी रही है। आर्थिक सम्पन्नता न होने के साथ ही साथ नारी की अस्मिता को बचाने के लिए दूसरी मूल समस्या उसके शोषण की है। भारत में सबसे अधिक शोषण का क्षेत्र स्त्री के श्रम का दोहन का रहा है। घर–बाहर तो वे काम करती ही रही हैं, हमेशा जिसे उनके कर्त्तव्यों से जोड़कर देखा जाता है। 1990 के बाद वैश्वीकरण और उदारीकरण का दौरा आया है और बाजारवाद हमारे जीवन पर हावी होने लगा और सांस्कृतिक विघटन की एक सर्वथा नई परम्परा आरंभ हुई।

इस उदारवाद और भूमंडलीकरण की सबसे ज्यादा चपेट में अगर कोई आया है तो वह है स्त्री। आज उपभोक्तावाद समाज नारी को वस्तु मानकर उसके नारी–सौंदर्य को बेच रहा है। आज बहुर्राष्ट्रीय कम्पनियां विश्व–सुंदरियों, ब्रह्माण्ड–सुंदरियों का उपयोग अपने औद्योगिक साम्राज्य के विस्तार हेतु मॉडलिंग के रूप में कर रहे हैं। अतः हमें इस ओर सतत् चेतना में रहने की आवश्यकता है। स्त्री–विमर्श/स्त्री–अस्मिता अब देह–विमर्श में बदल गया है। इसी पर प्रकाश डालते हुए डॉ0 रश्मि रेखा ने लिखा है –

''मुक्त बाजार व्यवस्था में बहुराष्ट्रीय कम्पनियां उसकी स्त्री छवि और सुंदर देह को अपने हक में भुनाना चाहती हैं, वह भी उनकी सुन्दरता की कसौटी पर बोल्ड एवं ब्यूटीफूल। इस तरह वस्तु की तरह स्त्री पहले भी बिकती रही है और आज भी बिक रही है। आंकड़ों पर यदि हम गौर करें, तो भारत में पांच–छह प्रतिशत से भी अधिक स्त्रियां किसी भी क्षेत्र में आगे हैं या मॉडलिंग के। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार विश्व की 98 प्रतिशत पूंजी और 99 प्रतिशत बड़े–बड़े संस्थानों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रबंधन और निर्णय लेने वाले पदों पर पुरुष का अधिकार है, जबकि पूरी दुनिया के कुल श्रम का 2/3 भाग स्त्रियां करती हैं और उन्हें कुल मजदूरी का 1/3 भाग ही मिलता है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

स्वातन्त्रता पूर्व की महिला लेखिकाओं में सुभद्रा कुमारी चौहान, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, चन्द्र किरण सोनरेकसा, उषा देवी मित्रा, तारा पाण्डेय, कमल चौधरी शिवरानी देवी, तेजरानी पाठक प्रमुख हैं। यह युग सामाजिक, राजनीतिक रूप से नवजागरण काल था। दहेज प्रथा, बाल–विवाह, सती प्रथा की निन्दा करते हुये विधवा विवाह को सामाजिक स्वीकृति दिलाने की कोशिश की गई। व्यक्तिगत पीड़ाओं और कुण्ठाओं तथा सामाजिक रूढ़ियों के प्रति अपना विरोध जाहिर किया गया। सुभद्रा कुमारी चौहान की 'उन्मादिनी' 'बिखरे मोती' आदि कहानियाँ इसी प्रकार की है। उनकी शेष 'अचल सुहाग' और 'वर्षगाँठ' जैसी कहानियों के माध्यम से भारतीय नारी के परम्परागत रूप को नकारते हुए प्राचीन परम्परा और रूढ़ियों के जंजीरों में जकड़ी हुई स्त्रियों के मन में इनके लिए कटूता भर दी। स्त्री विमर्श के इस सन्दर्भ में निराला का यह कथन प्रांसगिक है–

''आधुनिक रचना शैली की वह पहली महिला है। रूढ़ियों की पवित्रता की चाहरदीवारीं के बाहर उनकी निगाह गई है। वह समय के साथ हैं। स्त्रियों के मानसिक और व्यवहारिक जीवन का उन्होंने पर्दाफाश कर दिया है, जिससे समाज की सच्ची सूरत प्रतिफलित हुई है।''

'आदमखोर' कहानी संग्रह जो चन्द्र किरण सोनसेक्स की है उसमें 'गृहस्थी का सुख', 'छलिया', 'आदमखोर' जैसी कहानियों के माध्यम से नारी जाति के शोषण और उत्पीड़न को अभिव्यक्त किया गया है। उनकी कहानियों में भारतीय दाम्पत्य जीवन की टूटती गृहस्थी के कारण नारी के कष्ट और पुरूष पर आर्थिक रूप से निर्भर रहने के कारण हर प्रकार के अन्याय सहती नारी के प्रति चिन्ता व्यक्त की है।

मन्नू भण्डारी की कहानी 'ईसा के घर इंसान' के एक अश में नौतिक धारणा के टूटने का वर्णन है जहाँ चर्च का फादर लूसी, जोली और एंजिला नामक तीन नन्स की बाहर की दुनियाँ को देखने की अदम्य इच्छा को परम्परागत नैतिक आदर्शो की रक्षा के लिए खींची गई लक्ष्मण रेखा के भीतर उनके मन को दफना देता है पर इनकी असहायता का फायदा उठाकर उनका यौन शोषण करता है।

मन्नू भण्डारी ने इस कहानी के माध्यम से नारी की स्वतंत्रता की आकांक्षा तथा परम्परागत नैतिक मूल्यों के प्रति विद्रोह को प्रकट किया है।

एंजिला कहती है– ''मैं नहीं रहुँगी यहाँ कभी नहीं रहूँगी। देखों मेरे रूप को, मैं अपनी जिन्दगी को, अपने इस रूप को चर्च की दीवारों के भीतर नष्ट नहीं होने दूँगी, मैं जिन्दा रहना चाहती हूँ। आदमी की तरह जिन्दा रहना चाहती हूँ। .... मैं भाग जाऊँगी .... मैं भाग जाऊँगी।''

इक्कीसवीं सदी की महिलायें केवल स्वतन्त्र व्यक्तित्व के विकास स्तर पर ही नहीं बल्कि कानूनी तथा आर्थिक रूप से भी स्वाबलम्बी है, और स्वतन्त्र व्यक्तित्व की वह स्वामिनी हैं।

दाम्पत्य जीवन की ऊब से मुक्ति के लिये छटपटाती स्त्री का चित्रण मृदुला गर्ग की कहानी 'हरी बिन्दी' में स्पष्टतः परिलाक्षित होता है जहाँ नायिका पति के बाहर जाने पर इतनी खुश होती है कि उस दिन वह सब कुछ कर लेना चाहती है जो पति के रहने पर नहीं कर पाती। जैसे नीलू कपड़े के साथ हरी बिन्दी लगाना, खाना न बनाना, गर्म टिकिया और गण्डी आईसक्रीम एक साथ खाना और एक अजानकी विदेशी के साथ काफ़ी हाऊस और टैक्सी में बैठना, बतियाना। वह जीवन के एक एक पल को स्वतन्त्र रूप से अपनी मर्जी के अनुसार जीना चाहती है– ''वह जीवन में पहली बार ऐसे इन्सान के साथ बैठी जो यह नहीं जानना चाहता कि उसका पति है या नहीं और है तो क्या काम करते हैं।''

सम्वन्ध विच्छेद का सबसे अधिक प्रभाव बच्चे पर पड़ता है। जिसका अत्यन्त मार्मीक चित्रण 'आपका बन्टी' में मन्नू भण्डारी ने किया है। जहाँ वह अकेले अपने बच्चे को पालती है। लेकिन पिता का अभाव बच्चे के मन पर विपरीत प्रभाव ड़ालने लगता है। माँ, पिता का भावनात्मक संरक्षण नहीं दे सकती। इस कारण विकट अन्तर्द्वन्दों से गुजरती नायिका शकुन्तला बच्चे को पिता के पास छोड़ आती है। यह सोंचकर कि शायद मेरे द्वारा चुनी जिन्दगी और उसके लिये किये गंच संघर्ष में बच्चें के मन पर कोई बुरा प्रभाव न पड़े। उसकी कोमल भावनायें, मासूमियत और पिता की स्मृति से भरा मन कहीं टूट न जाये। नायिका की द्वन्द्वात्मक स्थिति व संघर्ष को बड़ी ही सूक्ष्मता से उजागर करता है।

मन्नू भण्डारी की कहानी 'ऊँचाई' में स्त्री मन की द्वन्द्वात्मक स्थिति को अन्यन्त सूक्ष्मता के साथ उपस्थित किया गया है। जहाँ 'पर–पुरूष के स्पर्श मात्र से नारी अपवित्र हो जाती है।'' इस मिथक को तोड़ा गया है। पति को छोड़कर प्रेमी के पास गई नायिका को प्रेमी अपनाने से इन्कार कर देता है। वह पुनः अपने पति के पास लौट आती है, पर पति का नायिका शिवानी का दो पुरूषों के बीच बँटना स्वीकार नहीं है। वह शिवानी पर पूर्ण अधिकार चाहता हैं। नायिका मन से पति को चाहती है, पर प्रेमी से भी सम्बन्ध बनाये रखना चाहती है। वह कहती है– ''शरीर पर चाहे वह (अतुल) छाया हो पर मन पर कंवल तुम छाये हो किसी के कितने ही निकट चली जाऊँ, चाहे शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापित कर लूँ पर मन की जिस ऊँचाई पर तुम्हें बिठा रखा है वहाँ कोई नहीं आ सकता।''

आज की आधुनिक और सशक्त जागरूक लेखिका कुसुम कुमार ने अपने सशक्त नाटक 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' में सरकारी तन्त्र में आकण्ठ फैले भ्रष्टाचार को बेनकाव करती है। मंजुल भगत ने अपनी कहानियों का पात्र पुरूषों को बनाया और उसके दृष्टिकोण आदत अभिमान, कुण्ठाओं, निराशाओं के, व्यक्त किया। 'खलि तारीख', 'लंगर्ड बत्तखें', 'एक झुका हुआ आदमी' इसी तरह की कहानियाँ है। ममता कालिया, ऊषा प्रियंवदा, मालती जोशी, जैसी शसक्त महिला कथाकारों की

लेखनी से प्रस्फुटित हुई थे कहानियाँ किसी को भी झकझोर ने में समर्थ हैं।

एक वृद्धा, अकेली व परित्यक्ता नारी के जीवन का अत्यन्त सफल चित्रण मन्नू भण्डारी ने अपनी कहानी 'अकेली' में किया है 'सोमा बुआ बुढ़िया है। सोमा बुआ परित्यकता हैं, सोमा बुआ अकेली है। जैसे साधारण वाक्यों से प्रारम्भ हुई यह कहानी जैसे–जैसे आगे बढ़ती है अपनी कर्मस्पर्शो भावनाओं के साथ पाठक को इकझोर जाती है।

मदआ माँजी की कहानी 'सपने कभी नहीं मरते' में विकट परिस्थितियों में भी अपने सपने को जिन्दा करने के लिये दृढ़ संकल्प लिये नायिका 'मँझली' के जीवन संघर्ष को अत्यन्त जीवान्तता के साथ प्रस्तुत किया गया। एक दुर्घटना में 'मँझली' का एक हाथ और पैर कट गया है। पर वह अपनी जिन्दगी से हार नहीं मानती है, और नकली हाथ पैर की मदद से अपने सपने को साकार करती है। वह कहती है– ''मैं पुरानी बातें भूलकर नई जिन्दगी शुरू करना चाहती हूँ इस लिये मुझे सहानुभूति नहीं उत्साह चाहिये।'' यही विचार कई नई लोखिकाओं ने नारी संघर्ष पर व्यक्त कर अपना योगदान प्रस्तुत किये।

संदर्भ सूची

1. साठोत्तर हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी – डॉ. सौ. मंगल कप्पीकेरे
2. ईसा के घर इन्सान – मन्नू भण्डारी
3. हरी बिन्दी कहानी, मृदुला गर्ग
4. ऊँचाई कहानी – मन्नू भण्डारी
5. स्त्री–विमर्श –डॉ. विनय कुमार पाठक, भावना प्रकाशन
6. श्रृंखला की कड़ियाँ 'अपनी बात' से उद्धृत – महादेवी वर्मा
7. दिल्ली ऊँचा सुनती है – कुसुम कुमारी
8. सपने कभी नहीं मरते – मदुआ माँजी
9. डॉ. रश्मिरेखा : पितृसत्तात्मक भारतीय समाज और स्त्री–मुक्ति, परिषद् पत्रिका